8 मोहि कब ऐसा दिन आय है...

मोहि कब ऐसा दिन आय है...
सकल विभाव अभाव होहिंगे, विकलपता मिट जाय।।टेक।।
मोहि कब ऐसा दिन आय है...
यह परमातम, यह मम आतम, भेद बुद्धि न रहाय।
औरनि की का बात चलावै, भेद विज्ञान पलाय।।१।।
मोहि कब ऐसा दिन आय है...
जानैं, आप आप मैं आपो, सो व्यवहार बिलाय।
नय प्रमाण निक्षेपन मांहीं, एक न अवसर पाय।।२।।
मोहि कब ऐसा दिन आय है...
दर्शन ज्ञान चरण के विकलप, कहो कहां ठहराय।
द्यानत चेतन चेतन ह्वै है, पुद्गल पुद्गल थाय।।३।।
मोहि कब ऐसा दिन आय है...

हे प्रभु! मेरा ऐसा दिन कब आयेगा, जब सम्पूर्ण विभावों का अभाव होगा और सारे विकल्प मिट जायेंगे।।टेक।।

अज्ञानी जीव को ये परमात्मा और ये मेरा आत्मा – ऐसी भेदबुद्धि नहीं रहती। औरों की तो क्या बात करें – यहां तो भेदज्ञान का विकल्प भी नहीं रहता हैं।।१।।

हे प्रभु! अपने आप को आत्मस्वरूप जानने पर व्यवहार सापेक्ष बुद्धि नष्ट हो जाती हैं। तब नय–प्रमाण–निक्षेपों के बीच रहकर एक भी अवसर नहीं पाता अर्थात् इन सभी को जानने का विकल्प उत्पन्न नही होता हैं।।२।।

कविवर द्यानतराय जी कहते हैं कि जब चेतन चेतन में और पुद्गल पुद्गलमय हो जाता हैं तब दर्शन, ज्ञान, चारित्र के विकल्प भी कहाँ ठहरेंगे अर्थात् उन्हें जानने की बुद्धि भी नहीं रहती हैं।।३।।